स्त्री-भक्त राजा-पंचतंत्र

एक राज्य में अतुलबल पराक्रमी राजा नन्द राज्य करता था । उसकी वीरता चारों दिशाओं में प्रसिद्ध थी । आसपास के सब राजा उसकी वन्दना करते थे । उसका राज्य समुद्र-तट तक फैला हुआ था । उसका मन्त्री वररुचि भी बडा विद्वान् और सब शास्त्रों में पारंगत था । उसकी पत्नी का स्वभाव बडा तीखा था । एक दिन वह प्रणय-कलह में ही ऐसी रुठ गई कि अनेक प्रकार से मनाने पर भी न मानी । तब, वररुचि ने उससे पूछा - "प्रिये ! तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ । जो तू आदेश करेगी, वही करुँगा ।" पत्नी ने कहा - "अच्छी बात है । मेरा आदेश है कि तू अपना सिर मुंडाकर मेरे पैरों पर गिरकर मुझे मना, तब मैं मानूंगी ।" वररुचि ने वैसा ही किया । तब वह प्रसन्न हो गई ।

उसी दिन राजा नन्द की स्त्री भी रुठ गई । नन्द ने भी कहा- "प्रिये ! तेरी अप्रसन्नता मेरी मृत्यु है । तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ । तू आदेश कर, मैं उसका पालन करुंगा ।" नन्दपत्नी बोली- "मैं चाहती हूँ कि तेरे मुख में लगाम डालकर तुझपर सवार हो जाऊँ, और तू घोडे की तरह हिनहिनाता हुआ दौडे । अपनी इस इच्छा के पूरी होने पर ही मैं प्रसन्न होऊँगी ।" राजा ने भी उसकी इच्छा पूरी करदी ।

दूसरे दिन सुबह राज-दरबार में जब वररुचि आया तो राजा ने पूछा- "मन्त्री ! किस पुण्यकाल में तूने अपना सिर मुंडाया है ?"

वररुचि ने उत्तर दिया- "राजन् ! मैंने उस पुण्य काल में सिर मुँडाया है, जिस काल में पुरुष मुख में लगाम डालकर हिनहिनाते हुए दौडते हैं ।"

राजा यह सुनकर बडा लज्जित हुआ ।

अनुवाद - कुलदीप धर

स्त्री-भक्त राजा-पंचतंत्र

एक राज्य में अतुलबल पराक्रमी राजा नन्द राज्य करता था। उसकी वीरता चारों दिशाओं में प्रसिद्ध थी। आसपास के सब राजा उसकी वन्दना करते थे। उसका राज्य समुद्र-तट तक फैला हुआ था। उसका मन्त्री वररुचि भी बड़ा विद्वान् और सब शास्त्रों में पारंगत था। उसकी पत्नी का स्वभाव बड़ा तीखा था। एक दिन वह प्रणय-कलह में ही ऐसी रूठ गई कि अनेक प्रकार से मनाने पर भी न मानी। तब, वररुचि ने उससे पूछा - "प्रिये! तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। जो तुम आदेश करोगी, वही करूंगा।" पत्नी ने कहा - "अच्छी बात है। मेरा आदेश है कि तू अपना सिर मुंडाकर मेरे पैरों पर गिरकर मुझे मना, तब मैं मानूंगी।" वररुचि ने वैसा ही किया। तब वह प्रसन्न हो गई।

उसी दिन राजा नन्द की स्त्री भी रूठ गई। नन्द ने भी कहा- "प्रिये! तेरी अप्रसन्नता मेरी मृत्यु है। तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ। तू आदेश कर, मैं उसका पालन करूंगा।" नन्दपत्नी बोली- "मैं चाहती हूँ कि तेरे मुख में लगाम डालकर तुझपर सवार हो जाऊँ, और तू घोड़े की तरह हिनहिनाता हुआ दौड़े। अपनी इस इच्छा के पूरी होने पर ही मैं प्रसन्न होऊँगी।" राजा ने भी उसकी इच्छा पूरी करदी।

दूसरे दिन सुबह राज-दरबार में जब वररुचि आया तो राजा ने

प्रश्न- "भन्ते! किस पूर्व काल में तूने अपना सिर मुंडाया है?"

वरशिख ने उत्तर दिया- "राजन्! मैंने उस पूर्व काल में सिर मुंडाया है, जिस काल में पुरुष आप में लगाम डालकर हिनहिनाते हुए दौड़ते हैं।"

राजा यह सुनकर बड़ा लज्जित हुआ।

अनुवाद – कुलदीप शर